

SHRI DEVARAPALLI PRAKASH RAO

Shri Devarapalli Prakash Rao is a social worker from Odisha contributing to the field of affordable education and health.

2. Born on November 11, 1958, being the eldest in the family, Shri Rao started working in his father's tea shop to help him at the age of 18. While studying in class V, Shri Rao got scholarship and somehow continued study up to class XI. As he himself could not get good education, he got motivated to educate others. When he found neighbouring children roaming aimlessly instead of going to school, he started a school in his own 2 room house. While his family staying in one room, the other room became a "Pathshala". Seeing his documentary on Doordarshan, one renowned Club "Asha Aswasana" constructed a separate room in the slum and now 70 children are getting free primary education there.

3. Due to over strain of work and nutrition deficiency, Shri Rao's lower limbs were paralyzed and he became confined to bed for 6 months in S.C.B. Medical College & Hospital. Doctors diagnosed one tumour in his spinal cord which paralyzed him. A person donated a unit of blood for his operation which brought him another lease of life. His revival from paralysis became a turning point in his life. He started donating blood after 6 months of his surgery and has been continuing till now without looking back. Till date he has donated blood 218 times.

4. Presently, Shri Rao has been spending 3-4 hours daily in S.C.B. Medical Hospital facilitating needy patient by arranging life saving blood, hot water, ice cubes, Free Ambulance Seva for destitute patients, sharing information about Hospital and free Milk boiling facilities etc.

5. Shri Rao has received various awards and recognitions including more than 100 local institutional awards; Annie Besant International Award; World Human Rights International Award etc.

श्री देवराप्ल्ली प्रकाश राव



श्री देवरापल्ली प्रकाश राव ओडिशा के एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने वहनीय शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान दिया है।

2. आपका जन्म 11 नवम्बर, 1958 को हुआ। आप अपने परिवार में सबसे बड़े थे। आपने 18 वर्ष की उम्र में ही अपने पिता की मदद करने के लिए उनकी चाय की दूकान में कार्य करना आरंभ कर दिया था। कक्षा पांच में अध्ययन करते समय आपको छात्रवृत्ति मिली और आपने किसी तरह 11 कक्षा तक अध्ययन जारी रखा। चूंकि आप स्वयं अच्छी शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए थे, इसलिए आप दूसरों को शिक्षित करने के लिए प्रेरित हुए। जब आपने पड़ोस के बच्चों को विद्यालय जाने के बजाय बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर घूमते देखा तो आपने अपने दो कमरे के घर में विद्यालय शुरू कर दिया। आपका परिवार एक कमरे में रहता था और दूसरा कमरा "पाठशाला" बन गया। दूरदर्शन पर आपके वृत्तचित्र को देखकर एक प्रसिद्ध क्लब 'आशा आश्वासन" ने मलिन बस्ती में एक अलग कमरा बनाया और अब वहां 70 बच्चे नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

3. कार्य के अत्यधिक दबाव तथा पोषण की कमी के कारण आपके पैर लकवाग्रस्त हो गए और आप छह माह तक एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में बिस्तर पर पड़े रहे। डॉक्टरों ने आपकी रीढ़ की हड्डी में एक ट्यूमर का पता लगाया जिससे आप लकवाग्रस्त हुए थे। किसी व्यक्ति ने आपके ऑपरेशन के लिए एक यूनिट रक्त दान किया जिससे आपको नई जिंदगी मिली। लकवे से उबरना आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया। आपने अपनी सर्जरी के छह माह बाद रक्तदान करना आरंभ किया और अभी भी बिना पीछे मुड़े इसे जारी रखा हुआ है। अब तक आपने 218 बार रक्तदान किया है।

4. वर्तमान में, आप प्रतिदिन एस.सी.बी. मेडिकल कॉलेज में 3 से 4 घंटे का समय दे रहे हैं और निस्सहाय रोगियों के लिए जीवन रक्षक रक्त, गर्म पानी, बर्फ के टुकड़े, नि:शुल्क एम्बुलेंस सेवा की व्यवस्था करके, अस्पताल की जानकारी देकर तथा दूध गर्म करने की नि:शुल्क सुविधा आदि के द्वारा जरूरतमंद लोगों की सहायता कर रहे हैं।

5. आपको कई पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ा गया है जिनमें सौ से अधिक स्थानीय संस्थागत पुरस्कार; एनी बेसेंट अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार; विश्व मानवाधिकार पुरस्कार आदि शामिल हैं।